SANTHAL. (6.13)

- **परिचय:-** संथाल वर्तमान झारखंड राज्य में बसने वाली सर्वप्रमुख एवं सर्वाधिक आबादी वाली अनुसूचित जनजाति संथाल है। पूर्व में बंगाल के मिदनापुर जिला के सांथाल प्रांत में लंबे अरसे तक बसने के कारण इसे कालान्तर एवं कालीतर में संथाल कहे जाने लगे यह जनजाति 19वीं शताब्दी के प्रथम दशक में बिहार के संथाल परगना जागीर के हटने और बंगाल में पर्याप्त संख्या में आकर बस गये।

- **जनसंख्या** — 1851 तक संथाल परगना के दामिन-इ-कोह-प्रदेश में संथाल की कुल जनसंख्या (82,795) 1473 गाँवों में बसी थी। सन् 2001 ई० में संथाल की कुल जनसंख्या 34 लाख से अधिक हो गयी है।

- **भाषा** — संथाल भाषायी दृष्टिकोण से मुण्डारी वर्ग से संबंधित है किंतु निकटवर्ती क्षेत्र से संपर्क एवं ईसाई मशीनरी के प्रभाव से रोमन लिपि एवं बिहारी, बंगाली, उड़ीया आदि का प्रयोग भी करने लगे हैं।

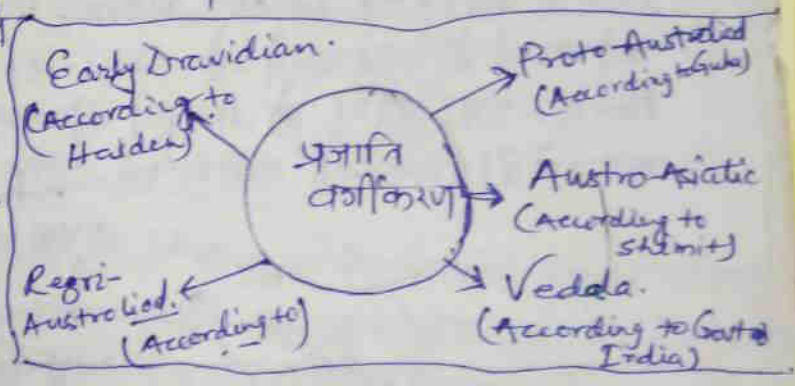

- **प्रजाति** — इस दृष्टिकोण से विभिन्न विद्वानों ने संथालों को विभिन्न प्रजाति का माना है →

- **शारीरिक विशेषता** — संथाली छोटे से मध्यम कद वाले होते हैं। इनके रंग काले व गहरे भूरे, कपाल दीर्घ, मुँह बड़ा एवं ओठ मोटा तथा लटका हुआ होता है।

- **निवास क्षेत्र:-** संथाल मुख्यरूप से संथाल परगना प्रमंडल, सिंहभूमि, हजारीबाग, पलामू, चतरा, और गिरिडीह, जिला में निवास करते हैं। संपूर्ण विस्तार में ये झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल के अतिरिक्त उड़ीसा, मध्यप्रदेश एवं असम राज्यों में भी 20° से 28° उत्तरी अक्षांश एवं 83° पूर्वी देशांतर से 92° पूर्वी देशांतर के बीच मिलते हैं।

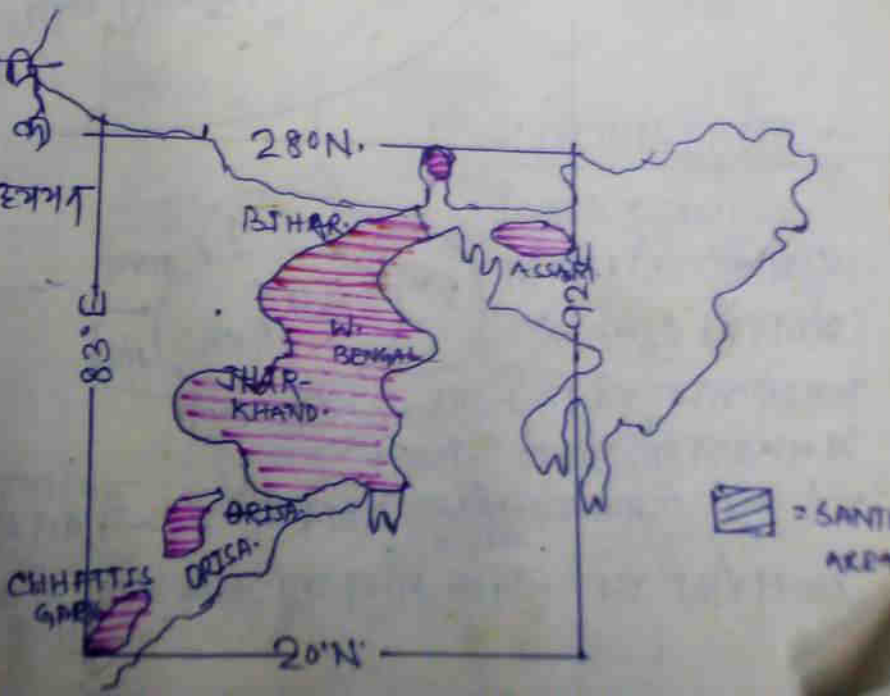

अस्तु भारत के प्रमुख जनजाति संथाल के जीवन के विभिन्न पक्षों को निम्न शीर्षकों में भली भाँति अध्ययन किया जा सकता है -

1. भौतिक परिवेश
2. आर्थिक जीवन
3. सामाजिक जीवन,
4. सांस्कृतिक जीवन
5. धार्मिक जीवन एवं,
6. राजनैतिक जीवन:-

1. भौतिक परिवेश :- संथाल प्रतीकात्मक रूप में संथाल परगना में बसते हैं जो 23°4' N से 25°18' N अक्षांश एवं 86°28'E to 87°57' E देशांतर के बीच पड़ता है। यह प्रदेश 350m से 650m ऊँची पहाड़ियों एवं सघन वनों से ढँका है जिसके बीच अनेक नदी नाले बहा करते हैं। यहां का शीतकालीन ताप 25°C एवं ग्रीष्मकालीन ताप 45°C तक और वार्षिक औसत वर्षा 150cm होती है। यहाँ मिलने वाले वृक्षों में साल, सागवान, महुआ करमा, पीपल, पलाश एवं कुसुम की प्रमुखता है। वनों में सुअर, गीदड़, तेंदुआ एवं चीते जैसे जानवर मिलते हैं।

2. आर्थिक जीवन :- संथाल का जीवन मुख्यतः वर्षा आश्रित कृषि पर निर्भर है। इनकी वर्तमान आर्थिक स्थिति प्रायः दयनीय है। प्राचीन तरीकों एवं यंत्रों से ये धान, ज्वार, बाजरा साग-सब्जी, मक्का आदि उगाते हैं। अनाज की पैदावार साल भर के लिए पर्याप्त न होने के कारण ये शिकार, मछली पकड़ने, वन वस्तु संग्रह, पशुपालन जैसे कार्य भी करते हैं। जब इससे भी गुजर-बसर करना मुश्किल हो जाता है तो बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश के मजदूरी की तलाश में पूरे परिवार के साथ झुण्ड के झुण्ड पलायन कर जाते हैं। निकटवर्ती खदान एवं चाय बगानों में भी ये काम करते देखे जाते हैं-

• भोजन सामग्री :-

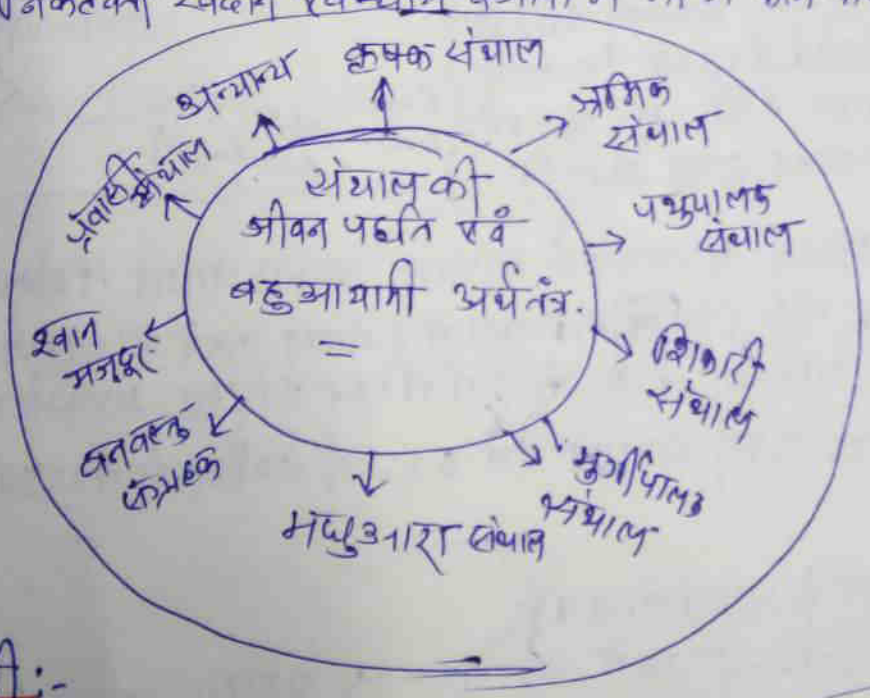

चावल व मछली संथालों को पसंदीदा भोजन है। सुबह को बासी भात एवं मिर्च-नमक तथा रात को उबले चावल एवं करी इनके आम दैनिक भोजन होते हैं। चावल से बना 'खपरा पीठा' एवं चावल-मांस का ओल पीठा में इनकी विशेष रुचि होती है।

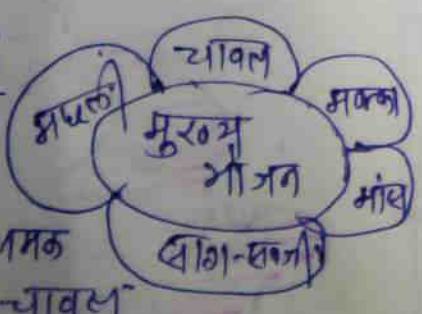

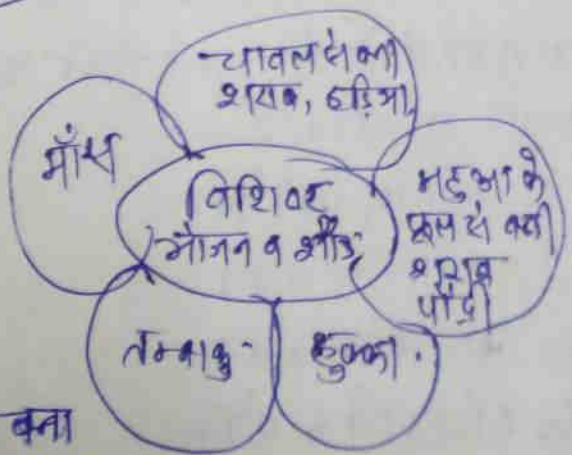

• **वस्त्र एवं आभूषण** :- संथाली पुरुष 1 मीटर लंबी लंगोटी पहनते हैं लिए इसको छोड़कर प्राय: खुले रहते हैं। संथाली महिला साड़ी एवं ब्लाउज पहनती है। ये अपने जूड़े (बाल) विशेष ढंग से बांधती हैं। फूल, पत्तियों, पंछियों के पंख आदि से शरीर को सजाने में स्त्री एवं पुरुष दोनों रुचि लेते हैं। संथाल युवतियां एवं महिला पीतल या चांदी के हंसुली, कड़े, बाजूबंद, झुमके, सिर पर सीपी-सीपी और कमर में करधनी का उपयोग करती हैं। ये मुँह, हाथ एवं पैर पर फूल पत्ती या पशुओं की आकृतियाँ गुदवाने की बड़ी शौकीन होती हैं। संथाली युवक हाथ में चाँदी के तोडोर, बाहों में खागा व कानों में कुंडल धारण करते हैं।

• **उपकरण एवं अस्त्र शस्त्र:**

2. समाजिक जीवन :- संथाल की 96.93% आबादी गांवों में बसती है। वे प्राय: संयुक्त परिवार में रहते हैं। एक ही घर में माता-पिता, अवयस्क संताने तथा विवाहित पुत्रों के संताने रहते हैं। परिवार का वरिष्ठ पुरुष घर का मुखिया होता है। सभी लोग मिलकर उत्पादन कार्य करते हैं और आय मुखिया के निर्देशानुसार खर्च किया जाता है। स्त्रियां घर के कार्यों एवं कृषि कार्यों में सहायता करती हैं। संथाली समाज पितृसत्तात्मक होता है। सम्पत्ति पर प्रथम पुत्रों का, द्वितीय अविवाहित पुत्रियों का एवं तृतीय पट्टीदारों का अधिकार होता है।

माना जाता है कि संथाली देवता ने हंस के दो अंडों से एक स्त्री एवं एक पुरुष को उत्पन्न किया और उसी से संथालों की उत्पत्ति हुई। संथाल 12 गोत्रों में विभक्त हैं। प्रत्येक गोत्र का अपना पवित्र चिह्न (Totam) होता है जैसे सोरेन गोत्र के लिए 'तारों का समूह' एवं पौरिया के लिए 'कबूतर'.

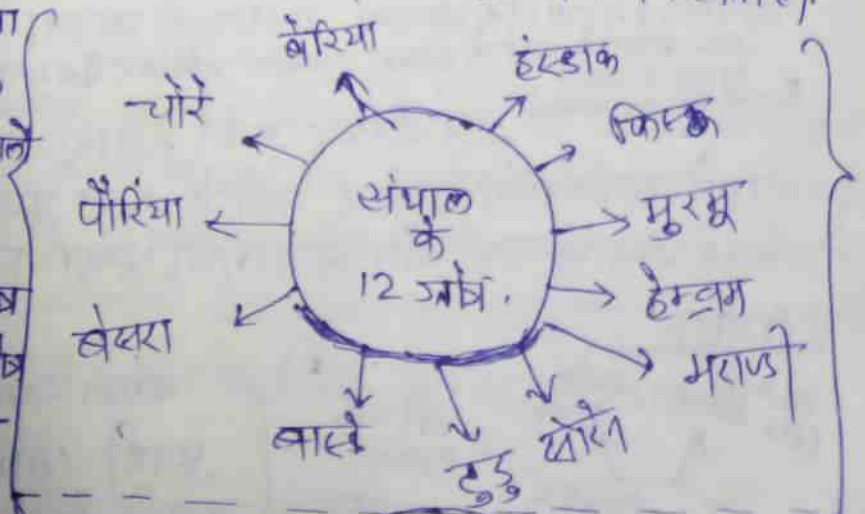

गृह तथा बस्ती :- संथाल के घरों का दीवार पत्थर अथवा मिट्टी का बना होता है। छाजन प्राय: फूस एवं कहीं-कहीं खपरैल का बना होता है।

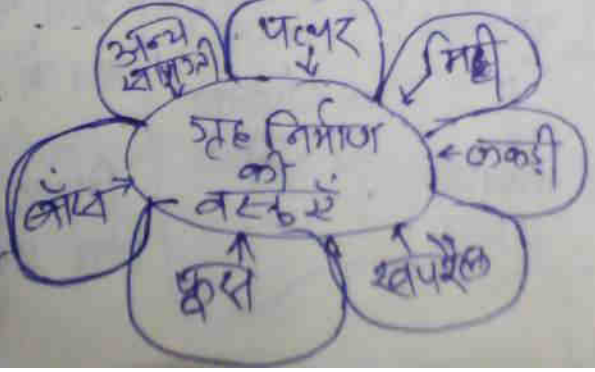

घर दो प्रकार का होता है - बंगाल ओराड़ (आयताकार) एवं कातोम ओराड़ (गोमेको

घर के चारों ओर मिट्टी की ऊँची चहारदीवारी होती है। घर के अंतरतम भाग भीतर में महिलाओं का प्रवेश वर्जित होता है। संथाली बस्ती प्रायः स्थायी होता है जहाँ एक ही गोत्र के 100-200 घर बसे होते हैं। बस्ती सड़क के दोनों किनारे रेखीय प्रतिरूप में बसे होते हैं। बस्ती में दो सार्वजनिक स्थल होते हैं- माझीस्थान (गाँव के मुखिया के घर के सामने गाँव के संस्थापक का स्थान) एवं जाहेर स्थान (गाँव में पूजा का स्थान).

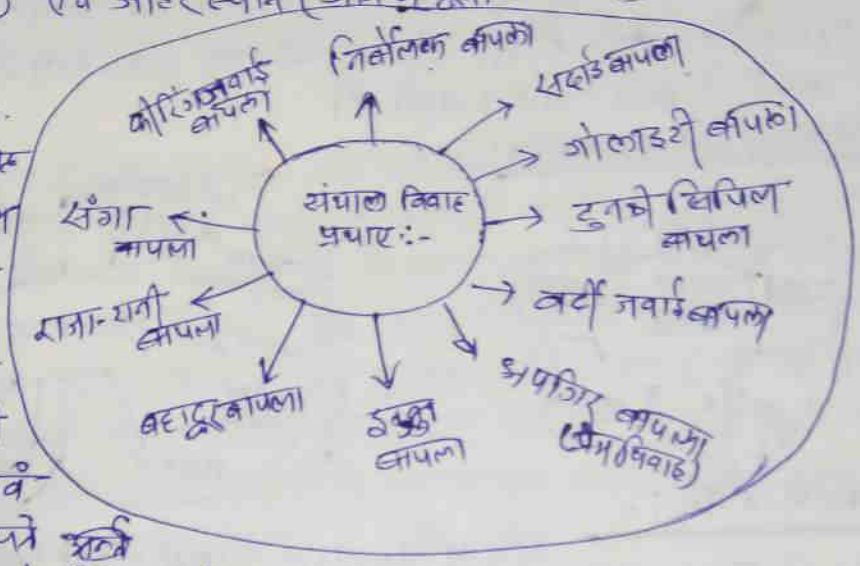

3. सांस्कृतिक जीवन :-

• विवाह संस्कार :- (बापला).

संथाली प्रायः एकविवाह ही करते हैं जो पूर्णतः बर्हिर्गोत्रीय होता है। विधवा विवाह, विधुर विवाह, तलाक प्रथा आदि भी प्रचलित है किंतु तलाक की स्थिति में वधू मूल्य लौटाने की भी प्रथा है। शहरीकरण एवं ईसाई धर्म के प्रसार के चलते अन्तर्जातीय विवाह भी देखने को मिलता है।

सिन्दुर दान प्रायः सभी विवाह का प्रमुख संस्कार है। जब परिवार के राजी खुशी से विवाह संपन्न होता हो तो वह सदाई बापला होता है। गरीब परिवार में कन्या को ही वर के घर लाकर शादी रचाई जाती है इसे टुनकी दिपिल बापला कहते हैं। पुत्रहीन व्यक्ति घर्दी जवाई बापला के तहत जंवाई को अपने यहां ही बसाते हैं। इतुत बापला, निर्बोलक बापला, राजा-रानी बापला, बहादुर बापला प्रेम विवाह के ही रूप हैं। समगोत्रीय विवाह के प्रथा के विरुद्ध सामाजिक बहिष्कार (बिटलाहा) की सजा पंचायत द्वारा दी जाती है।

• मृत्यु संस्कार :-

शव संस्कार प्रायः जलाकर अथवा दफनाकर किया जाता है। अस्थि एवं हड्डियों का विसर्जन दामोदर नदी में करना पुण्य माना जाता है। मृतकों के निजी उपयोग की वस्तुएं शव के साथ सौंप दी जाती हैं। मुखाग्नि का अधिकार स्त्रियों को कतई प्राप्त नहीं है

• त्योहार

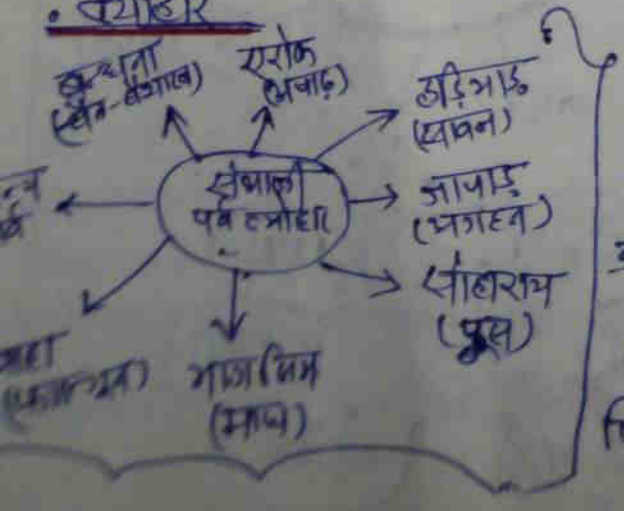

संथाल सभी पर्व सामूहिक रूप से मनाते हैं। गाँव के पुजारी (नायके) की ओर से व्रत रखा जाता है और पूजा अर्चना की जाती है। इस अवसर पर नाच-गान कार्यक्रम में सभी स्त्री-पुरुष समान रूप से भाग लेते हैं।

महुआ के पहले फल आने पर माघ उत्सव, शिकार के लिए सालारात उत्सव एवं कृषि की उन्नति के लिए एरोक, हड़िआड़, जापाड़ आदि मनाये जाते हैं।

वाद्य यंत्र

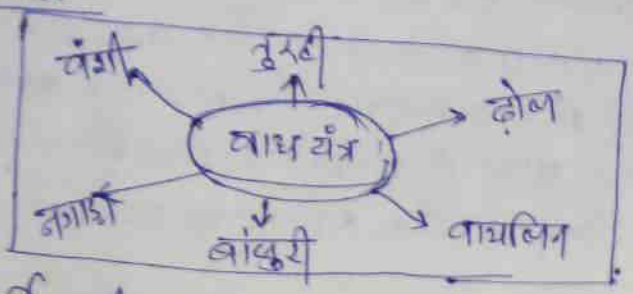

संगीत एवं नृत्य प्रेमी संथाल विवाह एवं अन्य उत्सवों के अवसर पर कर्णप्रिय लोक संगीत एवं लोक नृत्य में विभोर हो जाते हैं। इनके आनन्दित जीवन के अनुभवों से भरे होते हैं।

4. धार्मिक जीवन

संथाल अनेक देवी-देवता एवं आत्माओं की पूजा करते हैं। इनके सबसे बड़े देवता सृष्टिकर्ता ठाकुर होते है जो जीवन, वर्षा, फसलों एवं अन्य आवश्यक बातों पर नियंत्रण करते है। सनातन संथालों को बोंगा होड़ कहते है। संथालों का विश्वास है कि व्यक्ति परिवार एवं गाँव की कुशलता के लिए बोंगा गुरु एवं हापड़ामकों की दया पर निर्भर करता है।

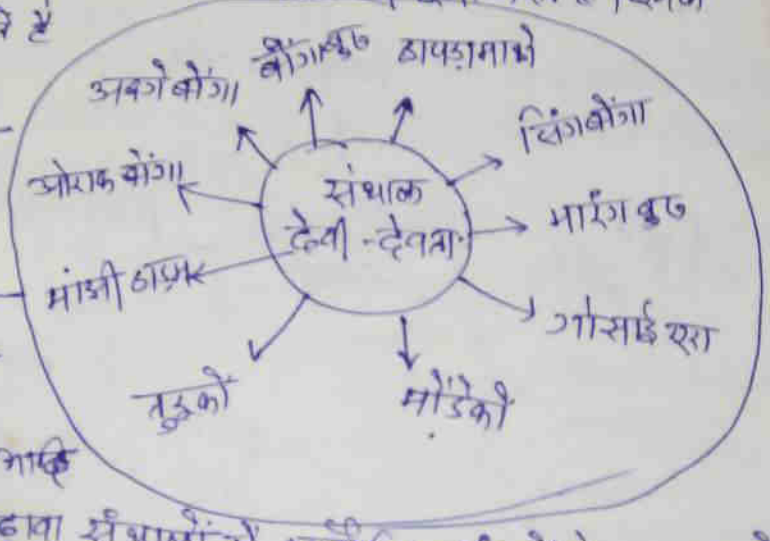

ये लोग डायन, ओझा, प्रेत आदि में भी विश्वास रखते हैं। बलि एवं चढ़ावा संथालों में अलौकिक संकटों से मुक्त करने का अचूक उपक्रम माना जाता है।

वर्तमान समय में संथाल लोग हिन्दू धर्म से प्रभावित हुए हैं। वे सर्वेश्वरवाद की ओर झुकने लगे हैं। शहरीकरण एवं औद्योगीकरण उनके धार्मिक मूल्यों में भी परिवर्तन ला रहे हैं।

5. राजनीतिक जीवन :-

संथाल ~~अनजाती~~ जनजाति ~~में पर्व स्मोहर~~ की परम्परागत जीवन काफी सुसंगठित एवं व्यवस्थित रहा है। इनके परम्परागत राजनैतिक संगठन का अपना विशिष्ट स्वरूप रहा है जिसके माध्यम से संथाल जनजाति अपने सामाजिक प्रतिमानों एवं मूल्यों के अनुरूप आचरण करते हुए संथाली एकात्मकता को अक्षुण्ण बनाए रखा है। प्रत्येक संथाली गाँव में एक पंचायत होती है जो लोकतांत्रिक आधार पर ग्राम सरकार चलाती है। इसके निम्न सदस्य होते हैं -

1. मांझी → गाँव का राजनीतिक संगठन का प्रधान
2. जोगमांझी - मांझी का सहायक
3. परामाणिक - मांझी की अनुपस्थिति में परिषद की अध्यक्षता करने वाला
4. जोग परामाणिक - परामाणिक का सहायक
5. नायके - गाँव का पुजारी
6. गोडैत - संवादवाहक

10-12 संथाली गाँवों को मिलाकर एक बड़ा राजनीतिक संगठन बनाया जाता है जिसे परगना कहा जाता है। परगना का प्रधान परगनैत कहलाता है। परगनैत का चयन गाँव के माँझियों में से ही किया जाता है। परगनैत का सहायक देश माँझी कहलाता है जो चाकलादार यानि संदेशवाहकों की नियुक्ति करता है। परगना में शामिल सभी गाँवों का माँझी परगनैत परिषद का सदस्य होता है।